इकाई 7 नवीन लोक प्रशासन

इकाई की रूपरेखा

7.0 उद्देश्य

7.1 प्रस्तावना

7.2 अमरीका में नवीन प्रवृत्तियाँ

- 7.2.1 सामाजिक असंतोष के बदलते परिवेश या वातावरण
- 7.2.2 फिलाडेल्फिया सम्मेलन
- 7.2.3 मिन्नोब्रुक सम्मेलन

7.3 नवीन लोक प्रशासन की विशेषताएँ

- 7.3.1 परिवर्तन तथा प्रशासनिक अनुक्रियाशीलता
- 7.3.2 तर्क-संगति
- 7.3.3 प्रबंधक-कर्मचारी संबंध
- 7.3.4 संरचनाएँ
- 7.3.5 लोक प्रशासन में शिक्षा

7.4 नवीन लोक प्रशासन के लक्ष्य

- 7.4.1 प्रासंगिकता
- 7.4.2 मूल्य
- 7.4.3 सामाजिक समता
- 7.4.4 परिवर्तन

7.5 नवीन लोक प्रशासन पर टिप्पणियाँ

7.6 सारांश

7.7 शब्दावली

7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- नवीन लोक प्रशासन का महत्व बता सकेंगे,
- नवीन लोक प्रशासन का परिप्रेक्ष्य बता सकेंगे,
- नवीन लोक प्रशासन की विशेषताएँ बता सकेंगे. और
- विकासशील समाजों के लिए नवीन लोक प्रशासन की प्रासंगिकता समझा सकेंगे।

7.1 प्रस्तावना

इससे पहले की इकाइयों में हमने विकासशील देशों की आवश्यकताओं के अनुरूप विषय क्षेत्र में नई परिस्थितियों के संदर्भ में लोक प्रशासन के प्रति नए उपागमों की चर्चा की है, जैसे तुलनात्मक प्रशासन तथा विकास प्रशासन। यहाँ तक

कि ब्रिटेन, अमरिका तथा कनाडा जैसे विकसित देशों में भी प्रशासनिक प्रणालियों को नई चुनौतियों का सामना करना पड़ा। नवीन लोक प्रशासन की संकल्पना इन्हीं चुनौतियों के प्रति एक अनुक्रिया है। इस इकाई में हम नवीन लोक प्रशासन के महत्व, विशेषताओं एवं प्रासंगिकता का वर्णन करेंगे।

7.2 अमरीका में नवीन प्रवृत्तियाँ

लोक प्रशासन के सिद्धांत एवं व्यवहार में सुधार के लिए बुद्धिजीवियों में व्यक्तिगत स्तर पर एवं विद्वानों और प्रशासकों के साझे मंच पर पुनर्विचार प्रारंभ हुए। उदाहरण के लिए एफ.सी. मोशर ने 1967 में एक पुस्तक, "गर्वनमेण्टल री-आर्गनाइज़ेशन :· केसेज़ एण्ड कमेंटरीज़ (Governmental Reorganization: Cases and Commentaries) संपादित की, जिसमें प्रशासनिक क्षमताओं एवं उत्तरदायित्व को मजबूत करने के उद्देश्य से प्रशासनिक पुनर्गठन एवं सुधार की साझी समस्या को उठाया गया था। प्रशासनिक परिवर्तन के किसी निश्चित प्रारूप के बारे मे विभिन्न मंचों पर हुई चर्चा पर कोई सर्व-स्वीकृत विचार प्राप्त नहीं हुआ। परंतु फिर भी, लोक प्रशासन के सिद्धांत व व्यवहार में परिवर्तन के विषय में तेजी से बदलते परिवेशों के अनुकूल बहुत से महत्वपूर्ण दृष्टिकोण सामने आए। परिवर्तन की इसी चाह के परिणामस्वरूप अमरीका में बहुत से सम्मेलनों का आयोजन हुआ। इन सम्मेलनों में 1967 में फिलाडेल्फिया और 1968 में मिन्नोब्रुक सम्मेलन सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं।

7.2.1 सामाजिक असंतोष के बदलते परिवेश या वातावरण

वर्तमान शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अमरीका में परिवेश के तेज परिवर्तनों ने उसे अधिक सम्पन्नता और शक्ति प्राप्त करने में मदद की। परन्तु उसी समय जनता के विभिन्न वर्गों में अधिक से अधिक सामाजिक तनाव व असंतोष बढ़ने लगा। ये सामाजिक असंतोष व विरोध मुख्यतः अल्प-संख्यकों, बेरोज़गारों और कुछ अति संवेदनशील (Sensitive) युवकों के समूहों तक सीमित रहे। जो निर्वाचित अधिकारियों, प्रशासकों, बुद्धिजीवियों व सार्वजनिक नेताओं के लिए चिंता का विषय बन गए। चुनौती भरी सामाजिक और तकनीकी समस्याओं के समाधान के प्रश्न को लेकर काफी सार्वजनिक बहस और विचार-विमर्श हुआ। नीतियों और संस्थाओं में बहुत से परिवर्तन लाने की प्रक्रिया प्रारंभ की गई और राजनीतिक व प्रशासनिक क्षमताओं को शक्तिशाली बनाने के उद्देश्य से तेजी से बदलते हुए आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, तकनीकी व मानवीय परिवेशों का सामना करने की दृष्टि से कुछ अन्य सुधारों या परिवर्तन पर बहस हुई।

7.2.2 फिलाडेल्फिया सम्मेलन

लोक प्रशासन के सिद्धांत व व्यवहार के बारे में इस सम्मेलन में अभिव्यक्त मुख्य विचारों का सारांश निम्नलिखित है :

अ) सीमित कार्य वाले राज्य के एक कल्याणकारी राज्य के रूप में क्रमिक परिवर्तन के साथ-साथ सरकार के कार्यों व दायित्वों में अत्यधिक वृद्धि हुई, जिसका निहित अर्थ हुआ प्रशासन के कार्यों और आयामों (Dimensions) में वृद्धि। चूँकि यह वृद्धि एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, अतः लोक प्रशासन के अध्ययन की कठोर सीमाएँ तय करना गलत होगा। इसके विकास को आसान बनाने के लिए इस विषय का क्षेत्र लचीला होना चाहिए। जबकि यह स्पष्ट है कि प्रशासक मुख्य रूप से नीति के कार्यान्वयन से संबंधित होने के अलावा, एक सलाहकार के रूप में नीति निर्माण की प्रक्रिया में शामिल होता है। इसलिए नीति और प्रशासन के बीच और फिर सरकार के अध्ययन व लोक प्रशासन के अध्ययन के बीच द्विविभागीकरण का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

ब) प्रशासनिक संगठनों में आंतरिक प्रक्रियाओं व पदसोपानक्रम की पूर्णता पर बहुत अधिक बल देने से प्रशासनिक निष्पादन में ऐसी कठोरताएँ उत्पन्न होती हैं जो तेजी से बदलते परिवेशों में उसकी प्रसंगिकता और क्षमता से दूर ले जाती है तथा इसलिए संगठनात्मक नवीनता एवं प्रबंधात्मक नमनीयता उचित है।

स) लोक प्रशासन के विषय एवं व्यवहार का अधिक ध्यान शहरी दरिद्रता व गंदगी, बेरोज़गारी, गरीबी, वातावरण संबंधी प्रदूषण और गिरते स्तर की सामाजिक समस्याओं की ओर होना चाहिए।

द) समाज (जनता) के वर्गों के बीच काफी सामाजिक व आर्थिक असमानताएँ हैं। इसलिए सामाजिक समता पर उचित ध्यान देना चाहिए। कार्य-कुशलता और उत्तरदायित्व के मौजूदा मूल्यों के साथ-साथ समता को प्रशासनिक मूल्य के रूप में बढ़ावा देने के लिये एक पुनर्गठित प्रशासन में लोगों की प्रशासनिक निर्णयों-निर्माण व क्रियाकलापों में भागीदारी को संस्थागत रूप में स्थापित किया जाना चाहिए। इसका अर्थ यह भी है कि लोक प्रशासन के अध्ययन के विषयों में सामाजिक समता भी एक विषय होना चाहिए।

क) लोक प्रशासन में प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं शिक्षा का उद्देश्य मात्र प्रबंधात्मक योग्यताओं व तकनीकी निपुणताओं

का विकास न होकर विभिन्न सरकारी एजेंसियों में कार्यरत सार्वजनिक कार्मिकों, प्रशिक्षणार्थियों व विद्यार्थियों में सामाजिक संवेदना या चेतना को गहरा करना होना चाहिए। इसके अलावा गलत व्यवहार व भ्रष्टाचार के अवसरों को कम करने के उद्देश्य से शिक्षा कार्यक्रमों में प्रशासनिक आचार पर उचित बल देने की आवश्यकता है।

7.2.3 मिन्नोब्रुक सम्मेलन

देश में सरकार व सामाजिक प्रणाली के सामने चुनौतीपूर्ण समस्याएँ पेश करने वाले तेजी से बदलते परिवेशों के संदर्भ में लोक प्रशासन के अध्ययन व व्यवहार की प्रसंगिकता का आलोचनात्मक पुनरावलोकन करने के लिए एक वर्ष पश्चात् 1968 में तुलनात्मक रूप से युवा विद्वान एवं प्रशासक मिन्नोब्रुक में एकत्र हुए। वहाँ पर कई दृष्टिकोण अभिव्यक्त किए गए। यद्यपि ये दृष्टिकोण फिलाडेल्फिया सम्मेलन में व्यक्त या कभी-कभी शिक्षाविदों द्वारा अभिव्यक्त विचारों से अधिक भिन्न नहीं थे, परन्तु जिस भावावेशपूर्ण ढंग से विचार-विमर्श हुआ वह मिन्नोब्रुक सम्मेलन की एक अलग विशेषता थी।

इसके अतिरिक्त, बाद में अपने दृष्टिकोणों का वेग (Tempo) बनाये रखने और सार्वजनिक प्रचार या सूचना के उद्देश्य से उनकी व्याख्या करने के उद्देश्य से भागीदारों की छोटी-छोटी समूह-बैठकें हुईं। इन युवा भागीदारों द्वारा अभिव्यक्त विभिन्न दृष्टिकोणों का सारांश था — पुरातन सिद्धांत के मूल्य निरपेक्ष (Value free) कार्य कुशलता के दृष्टिकोण के स्थान पर आदर्श दृष्टिकोण का समर्थन करना। आदर्श (Normative) दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि सरकारी प्रशासन का उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक परेशानियों को कम करना तथा सरकारी कर्मचारियों व नागरिकों के लिए जीवन-अवसरों को बढ़ावा देना चाहिए। अन्य शब्दों में, लोगों से सम्बन्धित वर्गों को प्रयोग और उपभोग के अभाव व इच्छाओं और सामाजिक अयोग्यताओं या असमर्थताओं से मुक्त करना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए यह प्रस्तावित किया गया कि प्रशासनिक संगठनों व प्रशासनिक प्रणालियों को निरंतर बदलते परिवेशों में ढालना चाहिए और प्रशासनिक प्रभावशीलता को सुधारने के लिए प्रशासनिक प्रक्रियाओं में नागरिकों या अन्य समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देना चाहिए।

☛ **बोध प्रश्न - 1**

टिप्पणी i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1 नवीन लोक प्रशासन की विषय वस्तु की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2 फिलाडेल्फिया सम्मेलन के प्रमुख दृष्टिकोणों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.3 नवीन लोक प्रशासन की विशेषताएँ

मिन्नोब्रुक सम्मेलन तथा उसके बाद भावावेश में अभिव्यक्त लोक प्रशासन के प्रति नवीन दृष्टिकोण की मुख्य विशेषताओं का जॉर्ज फ्रैडरिक्सन ने अपने बहुत से लेखों में सार दिया है। उनके अनुसार, सामाजिक समता वह मुख्य संकल्पना है, जिस पर नवीन दृष्टिकोण के समर्थक एक अतिरिक्त प्रशासनिक मूल्य के रूप में बल देते हैं। यहाँ तक कि उन्होंने अपनी एक पुस्तक का शीर्षक भी नवीन लोक प्रशासन रखा। उनके अनुसार, नवीन लोक प्रशासन की विभिन्न विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

7.3.1 परिवर्तन तथा प्रशासनिक अनुक्रियाशीलता

सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व तकनीकी परिवेश तेजी से बदल रहे हैं। अतः प्रशासनिक संगठनों को भी एक स्पष्ट मानदंड का विकास करना चाहिए, जिससे कि उनके निर्णयों व कार्यों की प्रभावशीलता व प्रासंगिकता को बदलते हुए संदर्भ में आंका जा सके। उन्हें अपने भीतर नियमित रूप से उचित परिवर्तन लाने का भी कोई ऐसा उचित साधन व प्रक्रिया का निर्माण करना चाहिए जिससे वह परिवेशों के प्रति अनुक्रियाशील हो सके। दूसरे शब्दों में, प्रशासनिक प्रणाली तथा उसके प्रत्येक विभाग और अभिकरणों में संगठनात्मक व संक्रियात्मक लोच होनी चाहिए, जिससे कि वह परिवेशीय परिवर्तनों के अनुसार अपने को ढाल सके।

7.3.2 तर्क-संगति

लोक प्रशासन में प्रशासनिक निर्णयों और कार्यों के मुख्य आधार के रूप में तर्क-संगति पर काफी बल दिया गया है। परन्तु यह तर्क-संगति वास्तव में प्रशासक की तर्क-संगति होती है न कि जैसी लोग उसकी व्याख्या करें। इसी प्रकार प्रशासक द्वारा नागरिकों से न केवल प्रस्तावित कार्य के विषय में, बल्कि क्या किया जाना चाहिए और किसके द्वारा किया जाना चाहिए के प्रश्न पर भी सलाह लेना आवश्यक है।

7.3.3 प्रबंधक-कर्मचारी संबंध

यह सत्य है कि एक प्रशासनिक संगठन में मानव-संबंधी दृष्टिकोण से कर्मचारियों में उत्पादकता (कुशलता) और मनोबल, दोनों बढ़ते हैं, परन्तु ये स्वयं में एक साध्य नहीं हैं। नागरिकों का मुख्य उद्देश्य उन प्रशासनिक कर्मचारियों के कार्य-निष्पादन और मनोवृत्तियों से संतुष्ट होना है, जिनका एक संगठन में मनोबल और उत्पादकता मानव-संबंधी दृष्टिकोण के कारण बढ़े हों।

7.3.4 संरचनाएँ

संगठनात्मक संरचना के प्रति एक गतिशील दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए उचित विकेंद्रीकरण और नियंत्रण व अधीनस्थ पदसोपानों में सुधार/परिवर्तन का निरंतर पुनरावलोकन करने की आवश्यकता है, जिससे परिवेशों की बदलती आवश्यकताओं के संदर्भ में संरचना प्रासंगिक बन सके। दूसरे शब्दों में, पोस्डकार्ब (Posdcorb) पर आधारित किसी मानकीकृत संगठनात्मक संरचना अथवा लोक प्रशासन के प्रति परंपरागत दृष्टिकोण के समर्थकों द्वारा जिन अन्य सिद्धांतों पर बल दिया गया है, उनकी अपेक्षा संगठनों की उपर्युक्त सूची में से वैकल्पिक संरचनाओं का चुनाव किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए छोटे विकेंद्रीकृत और लचीले पदसोपानक्रम ऐसे प्रशासनिक संगठनों के अनुकूल हो सकते हैं, जिनका संबंध जनता या उसके कुछ भागों की निजी चिन्ता के कार्यक्रमों से हो।

7.3.5 लोक प्रशासन में शिक्षा

लोक प्रशासन का विषय ज्ञान की बहुत सी धाराओं जैसी संकल्पनाएँ, विचार और अंतर्दृष्टि द्वारा समृद्ध किया गया है। विविधता इस विषय की विशेषता है। प्रबंधात्मक दृष्टिकोण, मानव-संबंधी दृष्टिकोण, राजनीतिक दृष्टिकोण और जन-भागीदारी या चयन दृष्टिकोण इसके विकास में योगदान कर रहे हैं। और यह इसी प्रकार होना भी चाहिए। चूँकि सार्वजनिक मामले या विषय, जिनसे सरकार जुड़ी है, काफी विविध और जटिल है, कोई भी एक दृष्टिकोण या सिद्धांत अथवा संकल्पना इसके औचित्य को समझने या कार्य का मार्ग-दर्शन करने में पर्याप्त नहीं होगी।

☛ **बोध प्रश्न - 2**

टिप्पणी i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) नवीन लोक प्रशासन की विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.4 नवीन लोक प्रशासन के लक्ष्य

नवीन लोक प्रशासन सम्बन्धी साहित्य के चार मुख्य लक्ष्यों—प्रासंगिकता, मूल्य, समता और परिवर्तन—पर बल दिया गया है।

7.4.1 प्रासंगिकता

लोक प्रशासन ने सदैव कार्यकुशलता व मितव्ययता पर बल दिया है। लोक प्रशासन की इस आधार पर आलोचना की जाती है कि यह समकालीन समस्याओं और मुद्दों के विषय में बहुत कम बात करता है। **मिन्नोब्रुक** सम्मेलन में प्रतिनिधियों ने नीति-उन्मुख लोक प्रशासन की आवश्यकता पर अपना ध्यान केन्द्रित किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि लोक प्रशासन को सभी प्रशासनिक कार्यों के राजनितिक एवं आदर्श (normative) निहित अर्थों एवं तात्पर्यों (Implications) पर स्पष्ट रूप से विचार करना चाहिए। प्रासंगिकता का दूसरा पहलू जिसके बारे में आवाज उठाई गई वह था लोक प्रशासन का ज्ञान। मिन्नोब्रुक सम्मेलन में निम्नलिखित कुछ प्रश्न उठाए गए :

अ) किन प्रश्नों का अध्ययन किया जाना चाहिए और कैसे किया जाना चाहिए के विषय में चुनाव का निर्णय करने के लिए हम किन मानदंडों का प्रयोग करते है?

ब) हमारे लिए हमारे प्रश्नों और वरीयताओं को कौन निर्धारित या पारिभाषित करता है?

स) लोक प्रशासन में ज्ञान सामाजिक व नैतिक निहितार्थों के विषय में हम किस सीमा तक जागरूक हैं?

द) सामाजिक व राजनीति विज्ञान के रूप में लोक प्रशासन के क्या उपयोग हैं?

य) क्या लोक प्रशासन वर्तमान में ऐसा ज्ञान पैदा करता है जो समाज में कुछ निश्चित संस्थाओं के लिए (सामान्यतः प्रभुत्वशाली) उपयोगी हो, दूसरों के लिए नहीं? लोक प्रशासन में यथास्थिति को चुनौती देते हुए ये बहुत ही ध्यान बँटाने वाले प्रश्न हैं।

7.4.2 मूल्य

नवीन लोक प्रशासन स्पष्ट रूप से आदर्शात्मक (Normative) है। यह परंपरावादी लोक प्रशासन के मूल्यों को छिपाने के व्यवहार तथा प्रक्रियात्मक तटस्थता को अस्वीकार करता है। मिन्नोब्रुक सम्मेलन के प्रतिनिधियों ने यह स्पष्टतः कहा कि मूल्य के प्रति तटस्थ लोक प्रशासन असंभव है। उन्होंने बल दिया कि सार्वजनिक अधिकारियों को कम सुविधा प्राप्त (Disadvantaged) लोगों के हितों का समर्थन करना है।

7.4.3 सामाजिक समता

लोक प्रशासन को यथास्थिति के यंत्र के रूप में दिखाया गया है, जो कम विशेषाधिकार प्राप्त समूह को सामाजिक न्याय प्रदान नहीं करता। नवीन लोक प्रशासन के अग्रणी नेता सामाजिक समता के सिद्धांत पर बल देते हैं। लोक प्रशासन का उद्देश्य इस सिद्धांत की प्राप्ति होना चाहिए। फ्रेडरिक्सन स्वयं सामाजिक समता की व्याख्या काफी साहस के साथ करते हुए कहते हैं, "वह लोक प्रशासन जो परिवर्तन लाने में असफल है, जो अल्प-संख्यकों के अभावों को दूर करने का प्रयास करता है, संभवतः उसका प्रयोग अंततः उन्हीं अल्प-संख्यकों को वंचित करने (Deprivation) के लिये किया जायगा।" जन-केंद्रित प्रशासन नवीन लोक प्रशासन का प्रमुख उद्देश्य है। सार्वजनिक सेवाओं के अधिक कारगर और मानवीय वितरण के हित में अन्य उद्देश्य—अनौकरशाहीकरण लोकतांत्रिक निर्णय-निर्माण और प्रशासनिक प्रक्रियाओं का विकेंद्रीकरण।

7.4.4 परिवर्तन

सामाजिक समता की प्राप्ति के लिए लोक प्रशासन द्वारा परिवर्तन को बढ़ावा देना आवश्यक है। लोक प्रशासन के शक्तिशाली हित समूहों के प्रभुत्व में आने से रोकने के लिए भी परिवर्तन आवश्यक है। नवीन लोक प्रशासकों द्वारा लाए हुए परिवर्तन को प्रशासनिक जीवन के एक चिर सत्य के रूप में समझना चाहिए।

निष्कर्ष रूप में पूर्ववर्ती प्रशासन की अपेक्षा "जातिगत" कम और "सार्वजनिक" अधिक होना चाहिए तथा "वर्णनात्मक" कम और "आदेशात्मक" अधिक व "संस्था-उन्मुख" कम और "जन प्रभाव-उन्मुख" अधिक तथा "तटस्थ" कम और "आदर्शात्मक" अधिक होना चाहिए और यह भी आशा की जाती है कि उसका दृष्टिकोण भी वैज्ञानिक होगा।

☛ **बोध प्रश्न - 3**

टिप्पणी i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) नवीन लोक प्रशासन के लक्ष्यों की व्याख्या कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

7.5 नवीन लोक प्रशासन पर टिप्पणियाँ

एलन कैम्पबैल के अनुसार, नवीन लोक प्रशासन के समर्थकों द्वारा जो विषय बड़े जोर-शोर के साथ सामने लाए गए थे, उनमें से अधिकांश नए नहीं थे। ये विषय समय-समय पर दूसरे विद्वानों द्वारा उठाए गए थे। परंतु यह सच है कि ये विषय नवीन लोक प्रशासन के प्रतिपादकों द्वारा अधिक बल तथा सामाजिक परिवर्तन के प्रति शक्तिशाली प्रतिबद्धता के साथ उठाए गए हैं। उनका निर्णय-निर्माण में जन प्रतिनिधित्व, सामाजिक समता का आदर्श मूल्य और अधिकतर जन-सेवा की ओर उन्मुख मानव-संबंध दृष्टिकोण पर अधिक बल एक बार फिर यह याद दिलाता है कि लोक प्रशासन के सिद्धांत और व्यवहार दोनों के पुनरानुकूल (Reorientation) की आवश्यकता है।

ड्वाईट वाल्डो ने अपनी पुस्तक "एन्टरप्राइज़ ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन (1980)" में बतलाया है कि लोक प्रशासन तीन परिप्रेक्ष्यों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है— नागरिक (मुवक्किल), उन्मुख नौकरशाही, प्रतिनिधि नौकरशाही व जन-प्रतिनिधित्व। ये सार्वजनिक परिप्रेक्ष्य यदि लोक प्रशासन में ठीक ढंग से ला दिए जाएं तो ये उसे पहले से भी अधिक लोकतांत्रिक बनाने की ओर प्रवृत्त होंगे।

कार्टर व डफरी ने "इंटरनेशनल जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन" (1984) में नवीन लोक प्रशासन पर लिखते हुए संदेह व्यक्त किया है कि क्या वास्तव में कार्यकुशलता, प्रभावकारिता और सार्वजनिक उत्तरदायित्व के वर्तमान मूल्यों के अतिरिक्त सामाजिक समता का उद्देश्य एक सुस्थापित प्रशासनिक ध्येय या मूल्य के रूप में पहचाना जा रहा है। अमरीका में धन व आय की बड़ी असमानताएँ काफी सीमा तक चल रही हैं। अमरीका द्वारा समाज कल्याण कार्यक्रमों पर सरकारी व्यय में हाल में की गई कमी के कारण जनता के वंचित वर्ग की आज भी अपने उन्नत जीवन के लिए अपेक्षित सामाजिक व आर्थिक सुविधाओं तक पर्याप्त पहुँच नहीं है।

हमारा यह मत है कि जबकि अमरीका में स्वतंत्र प्रतियोगिता व व्यक्तिगत पहल पर बल रहा है, सामाजिक समता को एक नीति तथा प्रशासनिक ध्येय के रूप अपनाना एक आसान प्रस्ताव नहीं है। कालांतर में शायद सामाजिक दबावों के कारण इसे अपनाना अधिक उत्साहवर्धक हो जाए। विकसित देशों (जैसे फ्रांस, स्वीडन व ब्रिटेन) और विकासशील देश (जैसे भारत, पाकिस्तान) दोनों में लोक प्रशासन के सिद्धांत व व्यवहार में हाल की प्रवृत्तियाँ इसी प्रकार के पुनरीक्षण और संवर्धन की ओर संकेत करती हैं। परन्तु प्रवृत्तियों की गहराई व प्रभाव की सीमा एक देश से दूसरे देश में उनकी ऐतिहासिक विरासत, राष्ट्रीय संसाधन, राजनीतिक प्रणाली का चरित्र, सांस्कृतिक व जनसांख्यिकीय— स्वरूप या ढांचा (demographic pattern) और राष्ट्रीय विकास में राज्य की भूमिका के अनुसार अलग-अलग है। उनके भिन्न राष्ट्रीय पार्श्वचित्र के कारण एक ओर कुछ देशों में प्रभाव बहुत कमज़ोर है तो दूसरी ओर बहुत शक्तिशाली। कुल मिलाकर ये प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित बातों की ओर संकेत करती हैं :

अ) सार्वजनिक नीतियों और प्रशासनिक कार्यों में सामाजिक समता पर बढ़ता हुआ बल,

ब) स्थानीय व निम्न स्तर पर प्रशासनिक प्रक्रियाओं (अर्थात् निर्णय-निर्माण, कार्यान्वयन इत्यादि) में बढ़ती

जन-प्रतिनिधित्व को आसान बनाने के लिए संस्थागत व्यवस्थाओं का निर्माण।

स) सरकार के भीतर राजनीतिक शक्ति के प्रति प्रशासनिक उत्तरदायित्व तथा प्रशासन के राजनीतिक निर्देशन को मजबूत बनाना।

द) सरकार के अत्यधिक विविध, जटिल तथा अनगिनत कार्यों को संपन्न करने के लिए प्रशासनिक क्षमता (अर्थात् कार्य-कुशलता तथा प्रभावकारिता) को ऊपर उठाना, जिसके लिए संगठनों के नवीन (नए) स्वरूपों तथा आधुनिक प्रबंधात्मक क्रियाविधियों व तकनीकें और प्रौद्योगिकिओं को अपनाना।

य) विभिन्न स्तरों के सार्वजनिक कार्मिकों (सरकारी कर्मचारियों) के बीच संघवाद का विकास और विवादों के मध्यस्थ निर्णय (arbitration) तथा सरकार व कर्मचारियों के परामर्श व बातचीत के लिए संगठित व्यवस्थाओं का बनाना।

प्रशासनिक प्रणालियों में इन प्रवृत्तियों के कारण लोक प्रशासन के अध्ययन का क्षेत्र काफी अधिक विस्तृत हो गया है। इसके अतिरिक्त, अध्ययन अब केवल प्रशासनिक तथ्यों या घटनाओं, नीतियों, संगठनों एवं प्रक्रियाओं के वर्णन व विश्लेषण से ही संतुष्ट नहीं है। यह और अधिक रूप से आदर्शात्मक होता जा रहा है, क्योंकि यह अब सामाजिक समता के प्रति उन्मुखता, लोकतांत्रिक उन्मुखता, आचार-संबंधी व्यवहार एवं निरंतर फैलती हुई प्रशासनिक व्यवस्थाओं व नागरिकों की भागीदारी के प्रश्नों से संबंधित है। इसके अतिरिक्त यह अब और भी अधिक तुलनात्मक बनता जा रहा है क्योंकि यह अब विभिन्न राष्ट्रीय परिवेशों के बहुत से पहलुओं (राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, जनसंख्या संबंधी, भौतिक व तकनीकी) के संदर्भ में प्रशासनिक नीतियों व संगठनों तथा कार्यान्वयन का परीक्षण करता है और संकल्पनाओं का निर्माण करता है। संक्षेप मे, नवीन लोक प्रशासन सिद्धांत व व्यवहार दोनों क्षेत्र में व्यापक, प्रकृति में वर्णनात्मक के साथ आदर्शात्मक व विषय सार में बहु-विषय होने के साथ-साथ तुलनात्मक है।

बोध प्रश्न - 4

टिप्पणी i) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।
ii) इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) नवीन लोक प्रशासन पर वाल्डो की टिप्पणियों की व्याख्या कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....
.....

2) लोक प्रशासन में नवीन प्रवृत्तियों की व्याख्या कीजिए।

.....
.....
.....
.....
.....
.....

7.6 सारांश

इस इकाई में हम ने नवीन लोक प्रशासन के संदर्भ व महत्व की जाँच की है। हमने नवीन लोक प्रशासन की मुख्य विशेषताओं का भी परीक्षण किया गया है। नवीन लोक प्रशासन पर टिप्पणियों तथा इस संकल्पना का लोक प्रशासन में नए विकासों पर प्रभाव के विषय में भी विचार किया है।

7.7 शब्दावली

प्रशासनिक उत्तरदायित्व : नौकरशाही में अपने निर्णयों व कार्यों के बारे में वरिष्ठ के प्रति उत्तरदायित्व तथा सरकार की कार्यकारिणी शाखा का विधान मंडल के प्रति उत्तरदायित्व

प्रशासनिक सामर्थ्यता : सरकार की प्रशासनिक शाखा की अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने या पूरा करने की योग्यता

प्रशासनिक प्रभावकारिता : एक संगठन द्वारा लक्ष्य/उद्देश्य प्राप्ति की सीमा

प्रशासनिक कार्यकुशलता : एक संगठन में निवेश की तुलना में उत्पादन का अनुपात

संगठनात्मक समता : एक संगठन के निम्न स्तरों पर अधिक ध्यान के साथ सभी कर्मचारियों के साथ अच्छा व्यवहार

सामाजिक समता : प्रशासन द्वारा सेवाओं व वस्तुओं की आपूर्ति प्राथमिकता के आधार पर कम सुविधा प्राप्त लोगों की आवश्यकताओं से सीधे संबद्ध होनी चाहिए।

7.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

अवस्थी व महेश्वरी, 1985, **लोक प्रशासन** अध्याय 2 और 3; लक्ष्मी नारायण अग्रवाल : आगरा

भट्टाचार्य, 1987, **पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन : स्ट्रक्चर प्रॉसेस एण्ड बिहेवियर** अध्याय-1 दी वर्ल्ड प्रेस प्राइवेट लिमिटेड : कलकत्ता।

मोरिनी फ्रैंक, 1971, **टूवर्ड्स ए न्यू पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन दा मिन्नोब्रुक पर्सपेक्टिव**; स्क्रैटन : पा चैन्डलर

7.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न - 1

1 भाग 7.2 व 7.2.1 देखिए।
2 भाग 7.2.2 देखिए।

बोध प्रश्न - 2

1 भाग 7.3 देखिए।

बोध प्रश्न - 3

1 भाग 7.4 देखिए।
2 भाग 7.4 देखिए।

बोध प्रश्न - 4

1 भाग 7.5 देखिए।
2 भाग 7.2 देखिए।